अथ मानुषोत्तर पर्वत के चार जिनालयों की पूजा

(अडिल्ल छन्द)

पहुकर दीप सुमध्य भाग भू में सही।
मानषोतर गिरि वलाकार कंचन मही॥
तापै चवदिस चार अकीरतम जिन थला।
सो पूजों इस थान थाप उर निरमला॥१॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचत्वारिंजिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचत्वारिंजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिचतुर्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

(चौपाई)

जीव रहित निरमल जल लाय। कनक पियाले धर गुन गाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। जनम मरन मेंटे फल एह॥२॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदन अगर घस्यो जल डार। आछे पातर करलै धार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। भौ दुख ताप मिटे फल एह॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

तंदुल उज्ज्वल अखंड अनूप। कीनै शुद्ध धोय अनुरूप।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। ता फल सिद्धलोक फल लेय॥३॥

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽक्षयपदप्राप्तयेऽक्षतं नि०

चांदी कनक कल्पद्रुम जान। तिनके फूल गूंथ हम आन।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मदन रोग नाशै फल एह।।५।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नाना रस नैवेद बनाय। मोदक आदि किए कर लाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। वाँछा रोग मिटै फल एह।।६।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

दीपक रतनमई मन लाय। पातर धर अति भावन भाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मिथ्या मोह मिटे फल एह।।७।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि०

चंदन अगर धूप कर सार। खेऊँ अगनि माहिं थुति धार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। कर्म जरौ ताको फल एह।।८।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल और बदाम धुवाय। निरमल पातर धर गुन गाय।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। मरन मिटै शिव ले फल एह।।९।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

नीर गंध अक्षत पुष्प चरु सार। दीप धूप फल कर इक ठार।
पूजों मानुषोत्र जिन गेह। चव गति भवन मिटै फल एह।।१०।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ प्रत्येक अर्घ

(सोरठा)

मानुषोत्र गिर जान, ताकी पूरब दिस सही।
है जिन थान सुमानि, सो पूजों वसु द्रव्य तें।।१।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपूर्वदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दक्षिण धरा मँझार, याही गिर ऊपर सही।
तीरथ जिन थल सार, ते पूजों वसु द्रव्य तें।।२।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतदक्षिणदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्र के शीश, पच्छम दिश जानौं सही।
जिन थल सब जग ईश, सो पूजौं वसु द्रव्य तें।।३।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतपश्चिमदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

मानुषोत्र पै सोय, उत्तर दिश को जो कही।
जिनवर थान सु जाए, सो हौं पूजौं भावतें।।४।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतोत्तरदिशासम्बन्धिजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पहुकर अर्ध सुदीप, मानुषोत्र के पार कौं।
तहाँ उतपति क्षय कीय, सो सिध पूजों भावतें।।५।।

ॐ ह्रीं पुष्करार्द्धद्वीपमानुषोत्तरपर्वतादग्रे उत्पत्तिक्षयकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

याही पहुकर दीप का, सागर है सुखदाय।
ताकी उतपति छेद सो, मैं पूजौं थुति गाय।।६।।

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपवेष्टितसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप वारुनी नीर निध, वामें रचना जोर।
सो या भू उतपति तजी, ते पूजों मद तोर।।७।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस वारित भू वेढ कें, जो सागर जलरास।
जाकी उतपति तिन तजी, ते पूजों थुति भास।।८।।

ॐ ह्रीं वारुणीवरद्वीपवेष्टितसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप क्षीर वर है सही, भोग भोम सुभ थान।
ताकी उतपति तिन तजी, सो पूजौं धर ध्यान।।९।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीर महासागर सही, गुन को जान निधान।
तामें उतपति तिन तजी, सो पूजौं सिव थान।।१०।।

ॐ ह्रीं क्षीरवरसमुद्रस्योत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप घिर्तवर शुभ धरा, बहु जीवन को वास।
तामें उतपति तिन तजी, ते पूजों होय दास।।११।।

ॐ ह्रीं घृतवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वेढ़ि घिरत वर दीप कों, जो सागर शुभ नाम।
तामें उतपति तिन तजी, तेहु जजौं शुभ थान।।१२।।

ॐ ह्रीं घृतवरसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इक्षूवर है दीप सो, त्रस थावर को ठाम।
ताकी गति छेदी तिने, सोहु जजौं शुभ धाम।।१३।।

ॐ ह्रीं इक्षुवरद्वीपगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

वेढि परो इस दीपकों, इक्षूवर दधि सोय।
मरन जनम यामें तजें, अर्घ सु पूजों जोय।।१४।।

ॐ ह्रीं इक्षुवरसमुद्रगतिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम द्वीप नन्दीश्वरा, ताको बहु विस्तार।
ताकी उतपति तिन तजी, सो पूजों भव पार।।१५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपोत्पत्तिछेदकाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

इस पहुकर दीपादि दधि, सकल जीव के धाम।
तिनमें उतपति तजि गए, सो पूजौं शिव ठाम।।१६।।

ॐ ह्रीं पुष्करद्वीपादारभ्य नन्दीश्वरद्वीपपर्यंतमुत्पत्तिछेदकायाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(दोहा)

पहुकर आधे दीप मध, मानुषोत्र गिर सोय।
कंचन वरनौ सैल पै, जिन थल बंदौ जोय।।१।।

(वेसरी छन्द)

तीजे दीप विषैं मध भागा। मानुषोत्र परवत शुभ जागा।
वलयाकार त्वंग अति जानौ। मनुषलोक की हद्द प्रमानौ।।२।।

याके पार मनुख नहिं जावैं। देव जाय नाना सुख पावैं।
इसतैं परे कर्म भू होई। या गिर पार भोग भुमि जोई।।३।।

यह गिर मानुषोत्र गिर राजा। कनकमई सबही सुख काजा।
तिसपै चार दिसा में जानों। कूट कहे सुन्दर अधिकानौं।।४।।

तिन कूटन में सुर के बासा। महल बाग वन अति सुख रासा।
तिनमें एक एक सिध कूटा। चौ दिस चार जानि अघ छूटा।।५।।

चौ दिश सिद्धकूट पै जानौं, एक एक जिनवर का थानौं।
सो थानक है अनादि अनंता। बिना किए जानो सब संता।।६।।

कनकमई सब गेह जिनन्दा। रतन बिम्ब तिनमें सुखकन्दा।
पूजें देव खगा थुति गाई। भूमगोचरी पहुँच न पाई।।७।।

बंदे तें पातक खय जावैं। पुन्यहीन नहिं दरशन पावैं।
सो हम अलप पुन्य के धारी। तातैं हमको दरशन भारी।।८।।

ऐसी जान पुन्य के काजैं। तिन जिनमन्दिर पूजा साजैं।
पहुँचन की तौ सकती नाहीं। करैं भावना अति हरषाहीं।।९।।

(दोहा)

मानुषोत्र पै जिन भवन, चव दिस चार बखान।
तिनकौं हम यहाँ जजत हैं, अरघ आठ द्रव्य आन।।१०।।

ॐ ह्रीं मानुषोत्तरपर्वतसम्बन्धिजिनचैत्यालयेभ्योर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

❀ *इति मानुषोत्तरसम्बन्धिजिनचैत्यालयपूजा समाप्त* ❀

अथ नन्दीश्वर दीप पूजन विधान

(अडिल्ल छन्द)

अष्टमदीप नन्दीश्वर बहु विस्तार है।
ताके चव दिस बावन गिर मनि धार हैं॥
तिन सवपै जिनथान कहे बावन सही।
सो इहाँ थापन थाप जजौं पुन्य की मही॥१॥

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र अवतरत अवतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं कार्तिकादिमासे शुक्लपक्षेऽष्टाह्निकायां महामहोत्सवे नन्दीश्वरद्वीपे चतुर्दिक्षु द्वापंचाशज्जिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अथाष्टक

शुभ नीर निरमल त्रस सु जियबिन गंगधारा को सही।
धर पात्र सुन्दर हाथ अपनै वचन करि मुख थुति कही॥
तहाँ इन्द्र सुर ही जाय पूजें मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनै जिनथान जल जजहों इहाँ॥२॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

लै बावनौं गंध खानि चंदन नीरतैं घसि लाइयौ।
कर कनक पातर धार लीनो महा उर हरषाइयौ॥
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजें मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान चंदन जज इहां॥३॥

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं नि०

बिन खंड अक्षत धवल उज्ज्वल बीन नव शुभ लाय जी।
कर सुभग जलतें धोय नीके बिनती मुख गाय जी॥

तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान अक्षत जज इहाँ।।४।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

सुखदाय पहुप सुगंध–राशी वरन नाना जानिए।
बहु घाटि धारी लाय करतैं माल कर हित मानिए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान पहुप सुजज इहाँ।।५।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

नैवेद षट्रस तुरत लाकै सुभग मोदक हम लए।
धर थाल कंचन धार करमें भाव को निरमल ठए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान चरु जजहों इहाँ।।६।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मण दीपिका तम नाश करता जोतके धारक सही।
लै आरती गुन गाय जिनके भावना इम उर लही।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान दीपक जज इहाँ।।७।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

कर धूप दश विध गंध लेकै महा परमल दाय जी।
लै आपने कर माहिं थुति कर अगनि में धरवाय जी।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान धूप जजौं इहाँ।।८।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो दुष्टाष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

श्रीफल बदाम अनार खारक और पुंगीफल भले।
इन आदि निरमल लाय फल हों देव जिन पूजन चले।।

तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान फल जजहों इहाँ।।९।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

लै नीर चंदन तंदुला पुष्प और चरु दीपक कहे।
धर धूप फल कर अर्घ करलै भावना भावत भए।।
तहाँ इन्द्र सुरही जाय पूजैं मनुष को मौसर कहाँ।
इम जान नन्दीश्वर तनैं जिनथान अर्घ जजौं इहाँ।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्योऽनर्घपदप्राप्तयेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ जयमाला

(सोरठा)

नन्दीश्वर शुभ थान, अष्टम ताकी चौदिशा।
बावन जिन थल मान, सो पूजौं कर आरती।।१।।

(वेसरी छन्द)

याही अष्टम दीप मँझारा। जिन पूजन आवैं सुर सारा।
इम उत्कृष्टी प्रतिमा जानौं। धनुष पांच सौ त्वंग बखानौं।।२।।

रूप महा कौलों कवि गावैं। जिन तन से सब लच्छन पावैं।
मुद्रा शांति घ्राण दिठ देखैं। पदमासन कायोत्सर्ग पेखैं।।३।।

पूरब दिशा वा उत्तर भाई। श्रीजिनबिम्ब तनैं मुख पाई।
सो सब बिम्ब रतनमय होई। दीखै इम परतक्ष जिन जोई।।४।।

बहु विस्तार धरें जिन गेहा। ताके लखत होय बहु नेहा।
कटक बाग बन शोभा धारी। लगे शिखर नभ मिलन पधारी।।५।।

धुजा कलपवृछ तोरण धारैं। रतन तूप मंगल द्रव्य सारे।
प्रातहार्य वसु शोभ अपारा। मणि मंडल नभ माहिं सिधारा।।६।।

नाटशाल तहाँ भक्त करावैं। देव तहाँ नटि सुरधर गावैं।
सुर मन्दरि पंकति सुखकारा। तहाँ अमर धर्म की उतसारा।।७।।

महिमा तिनकी कबलौं गावैं। जिन जानैं कै जिन धुनि पावैं।
वा सुर इन्द्र जाय सो जानैं। बाकी तौ सामान्य बखानैं।।८।।

जे जिन मन्दिर सुमरत भाई। पाप कटें पुन्य बंध कराई।
तौ दरशन की महिमा सारी। कहै कौन फल की विधि भारी।।९।।

(दोहा)

तातैं नन्दीश्वर विषैं, जे हैं जिनके थान।
सो भव सुमरो थुति करो, पूजो शुभ फल धाम।।१०।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरदीपे द्वापंचाशज्जिनालयेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक दिशासम्बन्धि पूजा

प्रथम पूर्व दिशा पूजा

(गीता छन्द)

जाय नन्दीश्वर सु अष्टम दीप की पूरब दिसा।
लक्ष एक अंजन चार दधि गिरि आठ रतिकर गिर लसा।।
तिन ऊपरें जिन थान इक इक थाप तो इहा भाय जी।
हौं जजौं मन वच काय भावन गात सकत न थाय जी।।१।।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशि त्रयोदशजिनालयान्यत्रावतरतावतरत संवौषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्री नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं नन्दीश्वरद्वीपस्य पूर्वदिशायां त्रयोदशजिनालयान्यत्र मम सन्निहितानि भवत भवत वषट्, सन्निधिकरणम्।